पालि सर्जनात्मक लेखन डिप्लोमा प्रोग्राम

(Diploma Program in Creative Writing in Pali) - DPCWP

कुल क्रेडिट: 32 (8 प्रश्नपत्र × 4 क्रेडिट)
अवधि: 1 वर्ष (दो सेमेस्टर)
प्रथम सेमेस्टर में 4 प्रश्नपत्र और द्वितीय सेमेस्टर में 4 प्रश्नपत्र = कुल 8 प्रश्नपत्र

यह पाठ्यक्रम 8 प्रश्नपत्रों (प्रत्येक 4 क्रेडिट) के साथ कुल 32 क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

"पालि सर्जनात्मक लेखन" डिप्लोमा प्रोग्राम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं, जो छात्रों को पालि साहित्य और सर्जनात्मक लेखन के क्षेत्र में सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाने के लिए तैयार किए गए हैं: -

सर्जनात्मक लेखन की समझ विकसित करना:

- सर्जनात्मक लेखन की अवधारणा, सिद्धांतों, और तकनीकों को गहराई से समझाना।
- छात्रों को हिन्दी में कविता, कहानी, नाटक, स्क्रिप्ट, और निबंध जैसे विभिन्न सर्जनात्मक रूपों में अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।

पालि साहित्य का गहन अध्ययन:

- पालि साहित्य के प्रमुख ग्रंथों (त्रिपिटक, धम्मपद, सुत्तनिपात, जातक कथाएँ) की संरचना, शैली, और सांस्कृतिक महत्व को समझाना।
- बौद्ध दर्शन और नैतिकता को साहित्यिक संदर्भ में विश्लेषित करने की क्षमता विकसित करना।

पालि साहित्य को हिंदी विधाओं में ढालना:

- पालि साहित्य को हिंदी की विभिन्न विधाओं (कविता, कहानी, नाटक, स्क्रिप्ट, निबंध) में अनुवाद और अनुकूलन की तकनीकों का प्रशिक्षण देना।
- प्राचीन बौद्ध शिक्षाओं को आधुनिक हिंदी साहित्य के माध्यम से पुनःप्रस्तुति और प्रसार करना।

छंद लेखन और काव्य कौशल का विकास:

- पालि गाथाओं और हिंदी छंदों (दोहा, सवैया, चौपाई) की संरचना और लय को समझाना।
- छात्रों को पालि और हिंदी में छंद-आधारित रचनाएँ लिखने और परिवर्तन करने में निपुण बनाना।

पालि में अभिनव साहित्य रचना:

- आधुनिक संदर्भों (पर्यावरण, शांति, सामाजिक न्याय) में पालि भाषा में मूल रचनाएँ करने की क्षमता विकसित करना।
- बौद्ध मूल्यों को नवीन शैली और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करना।

स्क्रिप्ट लेखन और डिजिटल अनुप्रयोग:

- रेडियो, टीवी, और फिल्म के लिए स्क्रिप्ट लेखन की तकनीकों का प्रशिक्षण देना।
- पालि साहित्य को डिजिटल मंचों (ब्लॉग, पॉडकास्ट, सोशल मीडिया) पर प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करना।

सर्जनात्मक अनुसंधान और प्रस्तुति:

- छात्रों को शोध-आधारित सर्जनात्मक प्रोजेक्ट के माध्यम से स्वतंत्र रचना और प्रस्तुति कौशल विकसित करने में सक्षम बनाना।
- रचनाओं को प्रकाशन, मंचन, या डिजिटल प्रदर्शन के लिए तैयार करना।

सांस्कृतिक और वैश्विक संदर्भ में योगदान:

- पालि साहित्य और बौद्ध दर्शन को हिंदी और वैश्विक साहित्य के संदर्भ में जोड़कर सांस्कृतिक सेतु बनाना।
- नैतिक और आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा देना।

पालि सर्जनात्मक लेखन डिप्लोमा प्रोग्राम

(Diploma Program in Creative Writing in Pali) - DPCWP

1 वर्ष (दो सेमेस्टर), पाठ्यक्रम संरचना (32 क्रेडिट, 8 प्रश्नपत्र, प्रत्येक प्रश्नपत्र 4 क्रेडिट) - Online

सेमेस्टर 1 (16 क्रेडिट)

पाठ्यक्रम संरचना (Detailed Course Structure)

प्रश्नपत्र–1

पालि साहित्य का परिचय एवं सर्जनात्मक सम्भावनाएँ

(Introduction to Pali Literature and Creative Possibilities)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण			क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-01	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** - पालि भाषा और साहित्य की मूल रूपरेखा तथा प्रमुख ग्रन्थों का परिचय देना। - त्रिपिटक, अट्ठकथा, टीका और वंस साहित्य की साहित्यिक विशेषताओं को रेखांकित करना। - कथा, बुद्धकालीन पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा-शैली, उद्देश्य, नीति, चरित्र और काव्य-तत्त्वों की पहचान कराना। - उपजीव्य साहित्य और सर्जनात्मक लेखन की मूल संकल्पना स्पष्ट करना।			

		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी पालि साहित्य की प्रमुख विधाओं और ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे। - वे पालि पाठों में निहित कथानक, संवाद और चरित्र-तत्त्वों को पहचान सकेंगे। - वे पालि साहित्य को आधुनिक सर्जनात्मक लेखन के स्रोत के रूप में समझ सकेंगे। - वे चयनित अंशों पर संक्षिप्त विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिख सकेंगे।			
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पालि साहित्य का परिचय एवं सर्जनात्मक सम्भावनाएँ (Introduction to Pali Literature and Creative Possibilities)			
		क्रेडिट–1 : पालि साहित्य का परिचय 1.1 पालि भाषा और साहित्य का स्वरूप 1.2 त्रिपिटक का परिचय 1.3 अट्ठकथा और टीका परम्परा 1.4 वंस साहित्य का परिचय 1.5 पालि साहित्य का सांस्कृतिक महत्त्व	1	1	16-20

		क्रेडिट–2 : साहित्यिक विधाएँ और तत्त्व 2.1 कथा-साहित्य (कथावस्तु) 2.2 पात्र-चरित्र 2.3 संवाद-साहित्य 2.4 देशकाल, परिस्थितियाँ एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2.5 नीति और नैतिक प्रसंग 2.6 चरित्र और प्रसंग-निर्माण 2.7 भाषा-शैली एवं प्रयोग 2.8 उपमा, रूपक और प्रतीक 2.9 सुत्त अथवा गाथा का उद्देश्य	1	2	16-20
		क्रेडिट–3 : सर्जनात्मक लेखन के सिद्धान्त 3.1 सर्जनात्मक लेखन की संकल्पना 3.2 उपजीव्य साहित्य की अवधारणा 3.3 मौलिकता का परिपालन 3.4 कल्पनाशीलता एवं नवसर्जन दृष्टि 3.5 कथानक, चरित्र और दृष्टिकोण	1	3	16-20

		3.6 पठन से सर्जन तक की प्रक्रिया 3.7 संवेदनशील दृष्टि और गहरी समझ 3.8 कलात्मक प्रस्तुति, रूपान्तरण और पुनर्रचना 3.9 प्रभावी भाषा एवं उपयुक्त शैली			
		क्रेडिट–4 : अनुप्रयोग और अभ्यास 4.1 चयनित पालि अंशों का पठन 4.2 कथानक-सूत्र की पहचान 4.3 चरित्र-रेखांकन 4.4 विधा एवं शैली का निर्धारण 4.5 प्रारम्भिक सर्जनात्मक रूपरेखा 4.6 उद्देश्य का निश्चय	1	4	16-20

(Ram Nakshetra Prasad)

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–2

पालि कथा साहित्य एवं आधुनिक कथा-विधाएँ

(Pali Narrative Literature and Modern Narrative Genres)

<table>
<tr><th>सेमेस्टर</th><th>प्रश्नपत्र कोड</th><th>पाठ्यक्रम विवरण</th><th>क्रेडिट</th><th>यूनिट</th><th>घण्टे</th></tr>
<tr><td rowspan="2">सेमेस्टर - 1</td><td rowspan="2">DPCWP-02</td><td colspan="4">पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :
- विनय-कथाओं, जातक-अट्ठकथा, धम्मपद-अट्ठकथा, उदान, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, सुत्तनिपात, बुद्धवंस, और अपदान की कथात्मक संरचना से परिचित कराना।
- दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय और अंगुत्तरनिकाय में अभिनिविष्ट विषयवस्तुओं की पहचान कराना।
- आधुनिक हिन्दी कथा-विधाओं (कहानी, लघुकथा, बाल-कथा, लघु-उपन्यास) का संक्षिप्त परिचय देना।
- बुद्ध के समकालीन विभूतियों व पात्रों तथा उनकी जीवनगाथा का संक्षिप्त परिचय देना।
- कथानक-निर्माण, चरित्र-निर्माण और दृष्टिकोण के मूल सिद्धान्त समझाना।
- पालि कथा-स्रोतों से आधुनिक कथा-रूपों में रूपान्तरण का अभ्यास कराना।</td></tr>
<tr><td colspan="4">अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) :
- विद्यार्थी प्रमुख पालि कथा-स्रोतों का परिचय दे सकेंगे।
- वे पालि कथाओं के कथानक, चरित्र और नैतिक तत्त्वों की पहचान कर सकेंगे।
- वे पालि कथा के आधार पर हिन्दी कहानी या लघुकथा लिख सकेंगे।
- वे बाल-साहित्य और लघु-उपन्यास की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे।</td></tr>
</table>

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पालि कथा साहित्य एवं आधुनिक कथा-विधाएँ (Pali Narrative Literature and Modern Narrative Genres)			
		क्रेडिट–1 : पालि कथा-स्रोत 1.1 जातक-अट्ठकथा 1.2 धम्मपद-अट्ठकथा 1.3 उदान की कथात्मकता 1.4 विनय-कथाएँ 1.5 विमानवत्थु एवं पेतवत्थु की कर्मप्रधान कथाएँ 1.6 थेरगाथा एवं थेरीगाथा की अनुभवजन्य अभिव्यक्तियाँ 1.7 बुद्धवंस 1.8 सुत्तनिपात 1.9 अपदान के आख्यान-तत्त्व 1.10 निकायों में आख्यायिकाओं का भण्डार 1.11 वंस साहित्य में उपलब्ध ऐतिहासिक कथावस्तुएँ	1	1	16-20

		क्रेडिट–2 : आधुनिक कथा-विधाएँ 2.1 कहानी 2.2 लघुकथा 2.3 उपन्यास 2.4 बाल-कथा 2.5 आख्यायिका (ऐतिहासिक कथा) और नैतिक कथा	1	2	16-20
		क्रेडिट–3 : कथा-रचना के सिद्धान्त 3.1 कथानक-निर्माण 3.2 चरित्र-निर्माण 3.3 समय और परिवेश 3.4 कथावाचक और दृष्टिकोण 3.5 पुनःकथन, रूपान्तरण एवं पुनर्रचना	1	3	16-20
		क्रेडिट–4 : कार्याभ्यास 4.1 जातक से कहानी लेखन 4.2 धम्मपद-अट्ठकथा से कथा लेखन 4.3 जातक एवं धम्मपद की कथाओं से नैतिक बाल-साहित्य हेतु पुनर्लेखन	1	4	16-20

		4.4 विमानवत्थु एवं पेतवत्थु से गीति रचना (मुक्त तुकबन्दी) 4.5 थेरगाथा एवं थेरीगाथा से काव्य रचना 4.6 बुद्धवंस से पटकथा लेखन 4.7 निकायों में प्राप्त कथावस्तुओं के आधार पर कथा, कविता, बाल-साहित्य इत्यादि की रचना 4.8 लघु-उपन्यास रूपरेखा			

(Ram Nakshatra Prasad)

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–3

संवाद, नाटकीयता एवं पटकथा लेखन

(Dialogue, Dramatic Elements and Script Writing)

<table>
<tr><th>सेमेस्टर</th><th>प्रश्नपत्र कोड</th><th>पाठ्यक्रम विवरण</th><th>क्रेडिट</th><th>यूनिट</th><th>घण्टे</th></tr>
<tr><td rowspan="2">सेमेस्टर - 1</td><td rowspan="2">DPCWP-03</td><td colspan="4">पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :
- सुत्त-संवाद, मिलिन्दपञ्ह और विनय-प्रसंगों की नाटकीयता से परिचित कराना।
- नाटक, एकांकी और रेडियो-नाटक की मूल संरचना समझाना।
- संवाद-लेखन, मंच-निर्देश और दृश्य-विन्यास के सिद्धान्त बताना।
- रूपक, उपरूपक, वृत्तचित्र, पॉडकास्ट स्क्रिप्ट, धारावाहिक और चलचित्र फिल्म पटकथा के प्रारम्भिक स्वरूप का अभ्यास कराना।</td></tr>
<tr><td colspan="4">अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) :
- विद्यार्थी पालि संवाद-साहित्य के नाटकीय तत्त्वों की पहचान कर सकेंगे।
- वे संवाद-प्रधान नाटक या एकांकी की लघु रूपरेखा तैयार कर सकेंगे।
- वे रेडियो-नाटक और दृश्य-आधारित लेखन के मूल नियमों को समझ सकेंगे।
- रूपक, उपरूपक, वृत्तचित्र, धारावाहिक और फिल्म की पटकथा लेखन के मूल सिद्धान्तों को समझ सकेंगे।
- वे सरल स्तर पर लघु पटकथा या स्क्रिप्ट तैयार कर सकेंगे।
- संवाद लेखन की पद्धति, प्रक्रिया और शैलियों को सीख सकेंगे।</td></tr>
</table>

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : संवाद, नाटकीयता एवं पटकथा लेखन (Dialogue, Dramatic Elements and Script Writing)			
		क्रेडिट–1 : पालि संवाद और नाटकीयता 1.1 संवाद-पुरुष के रूप में बुद्ध 1.2 तिपिटक साहित्य में नाट्य तत्त्व 1.3 सुत्तों में संवाद-प्रवाह 1.4 मिलिन्दपञ्ह का प्रश्नोत्तर-रूप 1.5 विनय-प्रसंगों की नाटकीयता 1.6 चरित्र और वाग्व्यवहार 1.7 संयुत्त-निकाय की संवाद-शैली 1.8 दीघनिका, मज्झिमनिकाय और अंगुत्तरनिकाय में संवाद 1.9 संघर्ष और समाधान	1	1	16-20
		क्रेडिट–2 : नाटक और एकांकी 2.1 रूपक और उपरूपक 2.2 नाटक की संरचना 2.3 एकांकी की सर्जना	1	2	16-20

		2.4 रेडियो-रूपक 2.5 मंच-निर्देश 2.6 संवाद-संपादन			
		क्रेडिट–3 : पटकथा और दृश्य-लेखन 3.1 पटकथा का परिचय 3.2 पंच सन्धियाँ एवं पंच कार्यावस्थाएँ 3.3 दृश्य और अनुक्रम 3.4 एपिसोडिक लेखन 3.5 वृत्तचित्र और पॉडकास्ट स्क्रिप्ट 3.6 दृश्य-पट रूपरेखा की संकल्पना	1	3	16-20
		क्रेडिट–4 : संवाद-लेखन की प्रक्रिया और अभ्यास 4.1 पालि संवाद से एकांकी 4.2 रेडियो-नाटक लेखन 4.3 लघु पटकथा 4.4 एपिसोड-सार 4.5 प्रस्तुति	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–4

पालि काव्य एवं आधुनिक काव्य-सर्जन

(Pali Poetry and Modern Poetic Creation)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-04	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** - थेरीगाथा, थेरगाथा, धम्मपद, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, अपदान, बुद्धवंस और चरियापिटक के काव्य-तत्त्वों का परिचय देना। - छन्द और अलंकार की मूल संकल्पनाएँ (वुत्तोदय, सुबोधालंकार) से परिचित कराना। - गीत, नवगीत, मुक्तछन्द और गद्यकाव्य जैसी आधुनिक विधाओं का संक्षिप्त परिचय देना। - बाल-साहित्य की रचना का अभ्यास कराना। - पालि काव्य से प्रेरित हिन्दी और पालि में काव्य-रचना का अभ्यास कराना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी पालि काव्य की प्रमुख धाराओं और गाथाओं का संक्षिप्त विश्लेषण कर सकेंगे। - वे छन्द, अलंकार, बिम्ब और प्रतीक की मूल भूमिका समझ सकेंगे। - वे मुक्तछन्द, गद्यकाव्य या लघु गीत-रचना कर सकेंगे। - वे सरल बाल-साहित्य रच सकेंगे। - वे तुकबन्दी के आधार पर गीत तैयार कर सकेंगे। - वे पालि गाथा से प्रेरित आधुनिक कविता तैयार कर सकेंगे।			

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पालि काव्य एवं आधुनिक काव्य-सर्जन (Pali Poetry and Modern Poetic Creation)			
		क्रेडिट–1 : पालि काव्य का परिचय 1.1 काव्य का परिचय 1.2 थेरीगाथा 1.3 थेरगाथा 1.4 धम्मपद 1.5 विमानवत्थु 1.6 पेतवत्थु 1.7 अपदान 1.8 सुत्तनिपात 1.9 चरियापिटक 1.10 काव्य-तत्त्व विमर्श	1	1	16-20
		क्रेडिट–2 : काव्य-सौन्दर्य 2.1 वुत्तोदय का परिचय 2.2 छन्द का परिचय एवं महत्त्व	1	2	16-20

		2.3 छन्दोबद्ध शास्त्रीय रचना 2.4 सुबोधालंकार का परिचय 2.5 अलंकार का परिचय एवं महत्त्व 2.6 काव्य निर्माण में अलंकार की भूमिका 2.7 काव्य रचना में गुण एवं उसके प्रकार 2.8 काव्य में वर्जनीय दोष 2.9 बिम्ब, उपमाएँ और प्रतीक 2.10 तुकबन्दी, लय और ध्वनि 2.11 भाव-संरचना			
		क्रेडिट–3 : आधुनिक काव्य-विधाएँ 3.1 गीत 3.2 नवगीत 3.3 मुक्तछन्द 3.4 क्षेत्रीय विधाएँ 3.5 हिन्दी काव्य विधाएँ : दोहा, सोरठा इत्यादि 3.6 छन्दोबद्ध रचनाएँ	1	3	16-20

		3.7 खण्डकाव्य 3.8 महाकाव्य			
		क्रेडिट–4 : रचना-अभ्यास 4.1 गाथा से प्रेरित कविता 4.2 नैतिक विषय पर मुक्तछन्द 4.3 चरित्र-आधारित काव्य 4.4 लघु काव्य-रूपरेखा 4.5 छन्दोबद्ध रचनाएँ 4.6 काव्य संकलन	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

सेमेस्टर 2 (16 क्रेडिट)

पाठ्यक्रम संरचना (Detailed Course Structure)

प्रश्नपत्र–5

हिन्दी में पालि साहित्य का सर्जनात्मक रूपान्तरण

(Creative Adaptation of Pali Literature into Hindi)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-05	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** - रूपान्तरण, पुनःकथन और पुनर्रचना की संकल्पनाओं से परिचित कराना। - पालि सामग्री को हिन्दी कहानी, लघु-उपन्यास और उपन्यास में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया समझाना। - अध्याय-योजना, कथावाचक और शैली-परिवर्तन के मूल सिद्धान्त बताना। - कथावस्तु के विभाजन की प्रक्रिया/प्रविधि बताना। - बाल-साहित्य और लोकप्रिय साहित्य हेतु पालि कथाओं का अनुकूलन कराना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी रूपान्तरण, पुनःकथन और पुनर्रचना में भेद कर सकेंगे। - वे पालि कथा-स्रोत से हिन्दी कहानी या लघु-उपन्यास की रूपरेखा बना सकेंगे। - वे पाठक-वर्ग के अनुसार कथावाचक और शैली का चयन कर सकेंगे। - वे बाल-कथा या लोकप्रिय कथा के रूप में सामग्री का पुनर्लेखन कर सकेंगे।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : हिन्दी में पालि साहित्य का सर्जनात्मक रूपान्तरण (Creative Adaptation of Pali Literature into Hindi)			
		क्रेडिट–1 : रूपान्तरण के सिद्धान्त 1.1 रूपान्तरण 1.2 पुनःकथन 1.3 पुनर्रचना 1.4 शैली और पाठक-वर्ग 1.5 सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सुसंगति	1	1	16-20
		क्रेडिट–2 : हिन्दी कथा-विकास 2.1 कहानी 2.2 लघु-उपन्यास 2.3 उपन्यास 2.4 अध्याय-योजना 2.5 कथावाचक और दृष्टिकोण	1	2	16-20

		क्रेडिट–3 : अनुप्रयोग 3.1 जातक से हिन्दी कहानी 3.2 धम्मपद कथा से लघु-उपन्यास 3.3 विनय तथा सुत्त से चरित्र-कथा निर्माण 3.4 बाल-साहित्य रूपान्तरण 3.5 पुनर्लेखन और परिमार्जन	1	3	16-20
		क्रेडिट–4 : रचना-संचिका 4.1 संक्षिप्त रूपरेखा 4.2 अध्याय-योजना 4.3 शीर्षक एवं उपबन्ध 4.4 पारस्परिक प्रवाह 4.5 प्रस्तुतिकरण	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–6

पालि में नवीन साहित्य-सर्जन

(Innovative Literary Creation in Pali)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-06	**पाठ्यक्रम उद्देश्य** (Course Objectives) : - पालि भाषा में गद्य, संवाद, भाषण और लघु-कथा लिखने की प्रेरणा देना। - पालि में समकालीन विषयों की अभिव्यक्ति की सम्भावना दिखाना। - गाथा और लघु-कविता लेखन के सरल प्रयोग कराना। - पालि में रचना-संचिका (portfolio) तैयार करने की दिशा में मार्गदर्शन देना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी पालि में अनुच्छेद, लघु-लेख और लघु-कथा लिख सकेंगे। - वे पालि में संवाद और भाषण तैयार कर सकेंगे। - वे पालि में गाथा या लघु-कविता लिखने का प्रारम्भिक अभ्यास कर सकेंगे। - वे पालि रचनाओं का छोटा पोर्टफोलियो तैयार कर सकेंगे।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पालि में नवीन साहित्य-सर्जन (Innovative Literary Creation in Pali)			
		क्रेडिट–1 : पालि गद्य-सर्जन और पालि संवाद 1.1 अनुच्छेद-लेखन 1.2 लघु-लेख 1.3 लघु-कथा 1.4 समकालीन विषय 1.5 संवाद-लेखन 1.6 प्रश्नोत्तर 1.7 भाषण-लेखन 1.8 नैतिक विषयों पर वक्तव्य 1.9 निबन्ध लेखन	1	1	16-20
		क्रेडिट–2 : पालि काव्य-सर्जन 2.1 गाथा-लेखन 2.2 लघु-कविता 2.3 उपमा और रूपक 2.4 तुकबन्दी, भाव और लय 2.5 काव्य-संशोधन	1	2	16-20

		क्रेडिट–3 : सर्जनात्मक प्रयोग 3.1 लघु-कथा 3.2 कविता / गाथा 3.3 संवाद 3.4 भाषण / निबन्ध 3.5 प्रस्तुति	1	3	16-20
		क्रेडिट–4 : संस्कृत से पालि-छायानुवाद 1. छायानुवाद का परिचय एवं संकल्पना 2. पालि एवं संस्कृत का पारस्परिक भाषिक सह-सम्बन्ध 3. संस्कृत गद्य का पालि छायानुवाद 4. संस्कृत पद्य का पालि छायानुवाद 5. तुलनात्मक पाठ की समीक्षा 6. समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ 7. भाषा की शुद्धता एवं प्रवाह 8. सरल मानक पालि एवं नवीन शब्दावली का निर्माण	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–7

सर्जनात्मक लेखन के सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग

(Principles and Applications of Creative Writing)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-07	**पाठ्यक्रम उद्देश्य** (Course Objectives) : - सर्जनात्मक लेखन की संकल्पना, स्वरूप, प्रयोजन और प्रमुख सिद्धान्तों से विद्यार्थियों को परिचित कराना। - कथानक, चरित्र, संवाद, दृष्टिकोण, परिवेश, भाषा-शैली और संरचना जैसे रचनात्मक अवयवों की व्यावहारिक समझ विकसित करना। - कविता, कहानी, नाटक, पटकथा, निबन्ध, बाल-साहित्य और डिजिटल लेखन जैसी विविध विधाओं में लेखन-कौशल का आधार निर्मित करना। - रूपान्तरण, पुनःकथन, पुनःसर्जन, सम्पादन, पुनर्लेखन और प्रस्तुतीकरण की प्रक्रियाओं का अभ्यास कराना। - विद्यार्थियों को स्वतंत्र, मौलिक, सुव्यवस्थित और पाठक-उन्मुख सर्जनात्मक लेखन के लिए सक्षम बनाना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी सर्जनात्मक लेखन के प्रमुख सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं का संक्षिप्त विवेचन कर सकेंगे। - वे कथानक, चरित्र, संवाद, शैली और संरचना के आधार पर रचना-निर्माण कर सकेंगे। - वे कविता, कहानी, नाटक, पटकथा अथवा लघु गद्य-विधाओं में प्रारम्भिक से मध्यवर्ती स्तर की रचनाएँ तैयार कर सकेंगे। - वे पुनर्लेखन, सम्पादन, परिमार्जन और सहपाठी-समीक्षा के आधार पर अपनी रचनाओं को सुधार सकेंगे। - वे विविध माध्यमों—मुद्रित, मौखिक और डिजिटल—के लिए उपयुक्त सर्जनात्मक सामग्री तैयार कर सकेंगे।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : सर्जनात्मक लेखन के सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग (Principles and Applications of Creative Writing)			
		क्रेडिट–1 : सर्जनात्मक लेखन की संकल्पना और आधार 1.1 सर्जनात्मक लेखन का अर्थ, स्वरूप और महत्त्व 1.2 सर्जनात्मकता, मौलिकता और कल्पनाशीलता 1.3 संवेदना, अनुभव और अभिव्यक्ति 1.4 पाठक, प्रयोजन और अभिप्राय 1.5 सत्यता, प्रामाणिकता और तिपिटक आधारित कथावस्तु का परिपालन 1.6 कल्पनाशीलता एवं नवसर्जन दृष्टि	1	1	16-20
		क्रेडिट–2 : रचना-निर्माण के प्रमुख तत्त्व 2.1 कथानक-निर्माण 2.2 चरित्र-निर्माण 2.3 संवाद-लेखन 2.4 दृष्टिकोण, देशकाल और परिवेश 2.5 भाषा-शैली, शीर्षक और संरचना	1	2	16-20

		क्रेडिट–3 : विधा-आधारित लेखन और रूपान्तरण 3.1 कविता-लेखन 3.2 कहानी और लघुकथा-लेखन 3.3 नाटक और एकांकी-लेखन 3.4 पटकथा, रेडियो-रूपक और डिजिटल स्क्रिप्ट 3.5 पुनःकथन, रूपान्तरण और पुनःसर्जन	1	3	16-20
		क्रेडिट–4 : अनुप्रयोग, पुनर्लेखन और प्रस्तुति 4.1 चयनित विषय पर लघु रचना-लेखन 4.2 प्रारूप-लेखन और पुनर्लेखन 4.3 सम्पादन और परिमार्जन 4.4 सहपाठी-समीक्षा और प्रतिक्रिया 4.5 रचना-प्रस्तुति 4.6 पाठ 4.7 डिजिटल प्रस्तुतीकरण	1	4	16-20

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र–8

समेकित सर्जनात्मक परियोजना

(Integrated Creative Project)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DPCWP-08	**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) :** - पूरे वर्ष के अधिगम को एक संगठित सर्जनात्मक परियोजना में रूपान्तरित करना। - विद्यार्थियों को किसी एक विधा (कथा, उपन्यास, नाटक, पटकथा, बाल-साहित्य, डिजिटल स्क्रिप्ट आदि) में स्वतंत्र लेखन के लिए तैयार करना। - योजना, प्रारूप-लेखन, संशोधन, प्रस्तुति और अंतिम प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया सिखाना। - रचना-संचिका और परियोजना के माध्यम से रोजगारपरक लेखन-नमूना तैयार कराना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी चुनी हुई विधा में एक समेकित सर्जनात्मक परियोजना पूर्ण कर सकेंगे। - वे synopsis, draft और अंतिम संस्करण तैयार कर सकेंगे। - वे संगोष्ठी-प्रस्तुति और मौखिक परीक्षा में अपनी रचना का औचित्य स्पष्ट कर सकेंगे। - वे रचना-संचिका के माध्यम से आगे के प्रकाशन, शोध या डिजिटल प्रसार की दिशा में प्रारम्भिक आधार बना सकेंगे।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : समेकित सर्जनात्मक परियोजना (Integrated Creative Project)			
		क्रेडिट–1 : परियोजना-विकल्प (कोई एक) 1.1 उपन्यास 1.2 कहानी-संग्रह 1.3 बाल-साहित्य 1.4 नाटक 1.5 एनिमेटेड फिल्म 1.6 पटकथा 1.7 वेब-श्रृंखला 1.8 पॉडकास्ट 1.9 वृत्तचित्र 1.10 चित्रकथा 1.11 कथा 1.12 रचना-संचिका 1.13 यात्रा-वृत्तान्त	1	1	16-20

		1.14 साक्षात्कार 1.15 संस्मरण 1.16 लघु-कविता 1.17 अनुष्टुभा छन्द की रचना 1.18 मुक्त छन्द			
		क्रेडिट–2 : योजना और प्रारूप 2.1 विषय-चयन 2.2 संकल्प-टिप्पणी 2.3 संक्षिप्त रूपरेखा 2.4 प्रारूप-लेखन 2.5 पर्यवेक्षक परामर्श	1	2	16-20
		क्रेडिट–3 : संशोधन और प्रस्तुति 3.1 पुनर्लेखन 3.2 सम्पादकीय सुझाव 3.3 सहपाठी समीक्षा 3.4 प्रारूप-सज्जा	1	3	16-20

		3.5 सार्वजनिक प्रस्तुति			
		क्रेडिट–4 : अंतिम मूल्यांकन 4.1 परियोजना जमा करना 4.2 मौखिक परीक्षा/समूह विमर्श (ऑनलाईन/ ऑफलाईन) 4.3 संगोष्ठी-प्रस्तुति 4.4 रचना-संचिका समीक्षा 4.5 प्रकाशन / डिजिटल प्रसार योजना	1	4	16-20

मूल्यांकन:

- लिखित परीक्षा (60%): सांस्कृतिक और आधुनिक उपयोग।
- असाइनमेंट/मौखिक संवाद (40%): संवाद प्रस्तुति।

पाठ्यक्रम के परिणाम

(Program Outcomes)

- विद्यार्थी पालि साहित्य को आधुनिक साहित्य-सर्जन के स्रोत के रूप में समझ सकेंगे।
- वे हिन्दी और पालि दोनों में सर्जनात्मक लेखन कर सकेंगे।
- वे कहानी, नाटक, काव्य, पटकथा और डिजिटल लेखन की प्रारम्भिक दक्षता प्राप्त करेंगे।
- वे पालि स्रोतों का रूपान्तरण, पुनःकथन और पुनःसर्जना कर सकेंगे।
- वे सर्जनात्मक परियोजना और पोर्टफोलियो के माध्यम से स्वतंत्र लेखन-क्षमता विकसित करेंगे।

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

(Ram Nakshetra Prasad)

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Bauddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus